بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 27
Issue - 04

राह-ए-ईमान

अप्रैल
2025 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (इत्मामुल हुज्जत).....4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 3-01-2025).....8
7. क़ुर्आन और हदीस से मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई की दलीलें.....12
8. साफ और स्वच्छ पानी पीना कितना ज़रूरी है 22
9. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी के कुछ पहलू.....24
10. सामान्य ज्ञान.....30

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
खान मामून अहमद
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

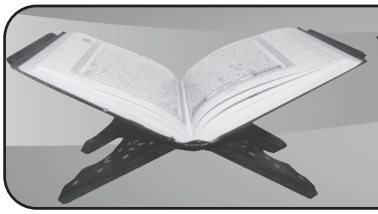

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

क़ुरआन की आयत का अनुवाद:- 39. और जो पुरुष चोर हो और जो स्त्री चोर हो उन दोनों के हाथ उस दोष के कारण काट दो जो उन्हों ने किया है। यह अल्लाह की ओर से दण्ड के रूप में है और अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है।

40-और जो व्यक्ति अत्याचार करने के बाद तौब: (पश्चाताप) कर ले और सुधार भी कर ले तो निश्चय ही अल्लाह उस पर कृपा करेगा। निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।

41-क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह वह सत्ता है कि आसमानों और ज़मीन की हुकूमत उसी की है। वह जिसे चाहता है अज़ाब देता है और जिसे (क्षमा करना) चाहता है क्षमा कर देता है और अल्लाह प्रत्येक बात का जिसे वह करना चाहे उस के करने का पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है।

(सूरह अल माइदा- 39-41)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

हदीस का अनुवाद: हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना के क़याम के दौरान ज़ुहर और असर, मग़रिब और ईशा की नमाज़ें जमा करके पढ़ाईं हालांकि न उस दिन बारिश हो रही थी और न किसी प्रकार का भय और जोखिम था। लोगों ने इब्ने अब्बास से पूछा आख़िर नमाज़ें जमा करके पढ़ाने का उद्देश्य क्या था? इब्ने अब्बास ने जावाब दिया कि हुज़ूर का मकसद यह था कि ज़रूरत के समय उम्मत को किसी मुश्किल या हर्ज का सामना न करना पड़े। (मुस्लिम किताबुस्सलात)

हदीस का अनुवाद: हज़रत सोबान वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब नमाज़ से फारिग़ होते तो तीन बार इस्तिग़फार करते तो यह दुआ मांगते हे अल्लाह तआला! तू सलामती देने वाला है। तेरी ओर से सलामती मिलती है। ए महिमा और आदर वाले ख़ुदा! तू बरकतों का मालिक है। इमाम औज़ाई जो इस हदीस के रावियों में से हैं। उनसे पूछा गया था। हुज़ूर इस्तिग़फार कैसे करते थे तो उन्होंने बताया 'अस्तग़फ़िरुल्लाह अस्तग़फ़िरुल्लाह' पढ़ते थे अर्थात मैं अल्लाह तआला से माफी माँगता हूँ। (मुस्लिम किताबुस्सालत)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

28 दिसम्बर सन् 1901 ई.

मुर्शिद और मुरीद (धर्मगुरू और अनुयायी) के पारस्परिक सम्बन्ध

मुर्शिद और मुरीद (धर्मगुरू और अनुयायी) के पारस्परिक सम्बन्ध गुरू और शिष्य के उदाहरण से समझ लेने चाहिए। जैसे शिष्य गुरू से लाभ उठाता है उसी तरह मुरीद अपने मुर्शिद से लाभ उठाता है। लेकिन शिष्य अगर गुरू से सम्बन्ध तो रखे मगर अपनी सीख और शिक्षा में क़दम आगे न बढ़ाए तो वह फ़ायदा नहीं उठा सकता। यही हाल मुरीद का है। इसलिए इस सिलसिला से नाता जोड़कर अपने ज्ञान एवं अध्यात्म को बढ़ाना चाहिए। सत्याभिलाषी को एक स्थान पर पहुँचकर कदापि नहीं ठहरना चाहिए वर्ना शैतान उसे दूसरी तरफ़ लगा देगा, और जिस तरह ठहरे हुए पानी में सड़न और बदबू पैदा हो जाती है उसी तरह उसमें भी ख़राबी की दुर्गन्ध आने लगेगी। इसी तरह यदि मोमिन अपनी तरक़्क़ी के लिए कोशिश न करे तो वह गिर जाता है। इसलिए नेक आदमी का फ़र्ज़ है कि वह धार्मिक सच्चाइयों की जिज्ञासा में लगा रहे। हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बढ़कर कोई उत्कृष्ट और गौरवशाली इन्सान दुनिया में नहीं गुज़रा। लेकिन उन्हें भी:-

(रब्बे ज़िद्नी इल्मा) رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا

(सूरः ताहा आयत नं. 115)

की दुआ करने का आदेश दिया गया था। फिर और कौन है जो अपने ज्ञान और अध्यात्म पर भरोसा करके एक जगह ठहर जाए और आगे तरक़्क़ी की ज़रूरत न समझे। ज्यों-ज्यों इन्सान अपने ज्ञान एवं अध्यात्म में तरक़्क़ी करेगा उसे ज्ञात होता जाएगा कि अभी बहुत सी बातें हल करने योग्य हैं, कई विषयों को प्रथम दृष्टया (उस बच्चे की तरह जो रेखागणित की आकृतियों को पूर्णतः व्यर्थ समझता है) बिल्कुल व्यर्थ समझते थे, लेकिन अन्ततः वही सच्ची बातों के रूप में उनको नज़र आए। इसलिए कितना आवश्यक है कि अपने तौर-तरीक़ों (आचरण) को बदलने के साथ ही ज्ञान को बढ़ाने के लिए हर बात की गहराई तक पहुँचा जाए। तुमने बहुत सी बेतुकी (अप्रासंगिक) बातों को छोड़कर इस जमात को क़ुबूल किया है। अगर तुम इसके बारे में पूरा ज्ञान और फ़लसफ़ा (दर्शन) हासिल नहीं करोगे तो इस से तुम्हें क्या फ़ायदा हुआ। तुम्हारे विश्वास और बोध (ज्ञान) में दृढ़ता कैसे पैदा होगी। छोटी-छोटी बातों पर शक और सन्देह पैदा होंगे, फिर क़दम डगमगाने का ख़तरा है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-4)

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: "इत्मामुलहुज्जत" (हुज्जत पूरी करना)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

मौलवी रुसुल बाबा साहिब अमृतसरी की पुस्तक हयातुल मसीह पर एक और दृष्टि तथा एक हज़ार रुपए इनामी जमा कराने के लिए निवेदन

परन्तु ज़रूरी था कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह भविष्यवाणी भी पूरी होती कि महदी मा'हूद अर्थात् वह मसीह मौऊद जब प्रकट होगा तो उस समय के मौलवी उस पर कुफ़्र का फ़त्वा लिखेंगे और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि वह फ़त्वा लिखने वाले लोग सम्पूर्ण संसार के बुरे लोगों से भी अधिक बुरे होंगे और समस्त पृथ्वी पर उनके जैसा कोई भी पापी नहीं होगा। वे हरगिज़ स्वीकार नहीं करेंगे परन्तु कपट से। अफ़सोस इन बुद्धू लोगों को इतनी भी समझ नहीं कि जो व्यक्ति अल्लाह और रसूल के कथन के अनुसार कहता है वह कैसे काफ़िर हो जाएगा। क्या कोई व्यक्ति इस बात को स्वीकार कर लेगा कि वह हज़ारों बुजुर्गों और वलियों को जो तेरह सौ वर्ष तक अर्थात् इन दिनों तक हज़रत ईसा का मृत्यु पा जाना मानते चले आए वे सब काफ़िर ही हैं और नऊज़ुबिल्लाह इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हो भी काफ़िर हैं जिन्होंने अपने करोड़ों अनुयायियों को यही शिक्षा दी और नऊज़ुबिल्लाह इमाम बुख़ारी भी काफ़िर जिन्होंने हज़रत ईसा की मृत्यु के बारे में अपनी सहीह में एक विशेष अध्याय (बाब) बांधा। इब्ने क़य्यिम भी काफ़िर जिन्होंने उनको हज़रत मूसा की तरह मुर्दों में शामिल किया इन बुज़ुर्गों के मुसलमान जानने वाले भी सब काफ़िर और मो'तज़िल: सब काफ़िर जिन की आस्था ही यही है कि हज़रत ईसा की वास्तव में मृत्यु हो चुकी है।

हे भलेमानस मौलवियों! क्या तुम्हें एक दिन मौत नहीं आएगी कि धृष्टता और चालाकी से समस्त संसार को काफ़िर बना दिया। ख़ुदा तआला तो फ़रमाता है कि जो तुम्हें अस्सलामो अलैकुम कहे उसे यह मत कहो कि لَسْتَ مُؤْمِنًا कि तू मोमिन नहीं है अर्थात् उसको काफ़िर मत समझो, वह तो मुसलमान है परन्तु तुमने उसे काफ़िर ठहराया जो समस्त ईमानी आस्थाओं में तुम्हारे भागीदार हैं, अहले क़िब्ल: हैं और शिर्क से पृथक तथा निजात (मुक्ति) का आधार रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुसरण को जानते हैं और अनुसरण से मुंह फेरने वाले को लानती, नरकी और अग्नि में डाले जाने वाला समझते हैं। हे दुष्ट मौलवियों! तनिक मरने के पश्चात् देखना कि इस जल्द बाज़ी की दुष्टता का तुम्हें क्या फल मिलता है। क्या तुमने हमारा सीना फाड़ा और देख लिया कि अन्दर कुफ़्र है ईमान नहीं और सीना काला है साफ़ नहीं। थोड़ा सब्र करो इस संसार की आयु कुछ अधिक लम्बी नहीं।

तुम्हारे नज़दीक केवल कुछ उपद्रवी मौलवी जो इस्लाम के लिए शर्म का स्थान हैं, मुसलमान हैं और शेष समस्त संसार काफ़िर। अफ़सोस कि ये लोग कितने कठोर दिल हो गए, उनके दिलों पर कैसे

पर्दे पड़ गए। हे ख़ुदा! इस उम्मत पर दया कर और इन मौलवियों की बुराई से इनको बचा ले और यदि ये हिदायत के योग्य हैं तो इनको हिदायत कर अन्यथा इन्हें पृथ्वी से उठा ले ताकि अधिक बुराई न फैले। ये लोग वास्तव में मौलवी भी तो नहीं हैं। तभी तो हमने इन लोगों के मुखिया और फ़ित्नों के इमाम एवं उस्ताद **शेख़ मुहम्मद हुसैन बत्तालवी** को अपनी पुस्तक 'नूरुल हक़' में सम्बोधित करके कहा है कि यदि उसको अरबी भाषा का कुछ ज्ञान प्राप्त है तो इस पुस्तक का सदृश बना कर प्रस्तुत करे और पांच हज़ार रुपया इनाम पाए, परन्तु शेख़ ने इस ओर मुंह भी नहीं किया। हालांकि कथित शेख इन समस्त लोगों के लिए बतौर उस्ताद है और उसी के उकसाने से ये मुर्दे हरकत कर रहे हैं।

हम बार-बार कहते हैं और बल देकर कहते हैं कि शेख और ये उसके समस्त चेले मात्र मूर्ख और अज्ञानी तथा अरबी विद्याओं से अपरिचित हैं! हमने सूरह फातिहा की तफसीर इन्हीं लोगों की परीक्षा के उद्देश्य से लिखी है, और 'नूरुल हक़' पुस्तक यद्यपि ईसाइयों की मौलवियत की परीक्षा लेने के लिए लिखी गई। परन्तु ये कुछ विरोधी अर्थात् **शेख़ मुहम्मद हुसैन बत्तालवी** और उसके पद-चिह्नों पर चलने वाले मियां रुसुल बाबा इत्यादि जो काफ़िर कहने वाले, गालियां देने वाले और निन्दा करने वाले हैं इस वार्ता से बाहर नहीं हैं। इल्हाम से यही सिद्ध हुआ है कि कोई काफ़िर और काफ़िर कहने वालों में से पुस्तक 'नूरुल हक़' का उत्तर नहीं लिख सकेगा। क्योंकि वे झूठे, काज़िब और मुफ्तरी, मूर्ख एवं अज्ञानी हैं।

यदि ये हमारे इल्हाम को इल्हाम नहीं समझते और अपनी दूषित प्रकृति के कारण उसे बीमारी, बनावट या शैतानी भ्रम समझते हैं तो पुस्तक 'नूरुल हक़' का उत्तर निर्धारित समय सीमा में लिखें और यदि नहीं लिख सकते तो हमारा इल्हाम प्रमाणित। फिर जिन लोगों ने अपनी अयोग्यता और अज्ञानता दिखा कर हमारा इल्हाम स्वयं ही सिद्ध कर दिया तो वे एक प्रकार से हमारे दावे को स्वीकार कर गए। फिर विरोधात्मक बकवास सुनने योग्य नहीं। हमारी ओर से समस्त पादरियों, **शेख़ मुहम्मद हुसैन बत्तालवी और मौलवी रुसुल बाबा अमृतसरी तथा उनके अन्य साथी इस मुक़ाबले के लिए आमंत्रित हैं और मुक़ाबले के निवेदन के लिए उन सब को जून 1894 के अन्त तक छूट दी है तथा मुक़ाबले पर पुस्तक प्रकाशित करने के लिए निवेदन के दिन से तीन महीने की समय सीमा है।**

फिर यदि जून 1894 ई. के अन्त तक निवेदन न करें तो इसके बाद कोई निवेदन नहीं सुना जाएगा और उनकी नादानी हमेशा के लिए सिद्ध हो जाएगी और मौलवियत का शब्द उनसे छीन लिया जाएगा परन्तु यदि वे जून 1894 ई. के अन्दर मुक़ाबले पर पुस्तक बनाने के लिए निवेदन कर दें तो समस्त निवेदन कर्ताओं का एक ही निवेदन समझा जाएगा और केवल पांच हज़ार रुपया जमा करा दिया जाएगा न कि अधिक और उनमें से जो लोग मुक़ाबले पर पुस्तक बनाने में सफल समझे जाएँगे चाहे वे ईसाई होंगे या ये सत्य के विरोधी नाम के मौलवी और या दोनों, वे इन पांच हज़ार रुपयों को आपस में बांट लेंगे। उन्हें अधिकार होगा। कि सब सामूहिक तौर पर पुस्तक बना दें। (शेष.....)

(पुस्तक: इत्मामुलहुज्जत पृष्ठ 70-74)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय

इमाम महदी का युग

इमाम महदी का युग- एक उल्लेखनीय जुमा

ख़ुदा तआला ने जो यह कहा है कि मैंने तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी है जिससे अभिप्राय यही प्राकृतिक क़ानून है जिसका नाम उसने इस्लाम रखा है और उस नेमत में एक जुमा का दिन भी है जिस दिन नेमत अपनी पराकाष्ठा तक पहुँचाई गई। यह इस बात की ओर एक संकेत था कि पुनः वैभवशाली नेमत जो:-

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ (الصّف:١٠)

(लियुज़हिरहू अलद्दीने कुल्लिही। सूरः सफ़्फ़ आयत-10)

के रूप में प्रदान की जाएगी वह भी एक उल्लेखनीय जुमा होगा। वह जुमा अब आ गया है, क्योंकि ख़ुदा तआला ने वह जुमा मसीह मौऊद के साथ विशिष्ट कर रखा है। क्योंकि नेमत को पराकाष्ठा तक पहुँचाने के वस्तुतः दो रूप हैं।

(1) तक्मील-ए-हिदायत (अर्थात् हिदायत सम्बन्धी समस्त पराकाष्ठागत नियम-क़ानूनों को पूर्ण रूप से बयान करना)

(2) तक्मील इशाअत-ए-हिदायत (अर्थात् हिदायत सम्बन्धी वर्णित समस्त पराकाष्ठागत नियम-क़ानूनों को पूर्ण रूप से प्रचारित व प्रसारित करना)

अब तुम ग़ौर करके देखो कि तक्मील-ए-हिदायत (अर्थात् हिदायत सम्बन्धी समस्त पराकाष्ठागत नियम-क़ानूनों को पूर्ण रूप से बयान करना) तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में पूरी हो चुकी थी। लेकिन अल्लाह तआला ने यह निर्णय किया था कि तक्मील इशाअत-ए-हिदायत (अर्थात् हिदायत सम्बन्धी वर्णित समस्त पराकाष्ठागत नियम-क़ानूनों को पूर्ण रूप से प्रचारित व प्रसारित करने) का ज़माना दूसरा ज़माना हो, अर्थात् वह ज़माना कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का प्रतिरूपी दृष्टि से प्रादुर्भाव हो, और वह ज़माना मसीह मौऊद व महदी मअहूद का ज़माना है। यही कारण है कि:-

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ

(लियुज़हिरहू अलद्दीने कुल्लिही) (सूरः अल्-सफ़्फ़ आयत नं. 10)

इस विषय में फ़रमाया गया है। सारे मुफ़स्सिरों (भाष्यकारों) ने एकमत होकर इस बात को

स्वीकार किया है कि यह आयत मसीह मौऊद के ज़माना से सम्बन्धित है। वस्तुत: दीन का ग़लबा (विजय) उसी समय हो सकता है जब सारे धर्म मैदान में निकल आएँ और धर्म के प्रचार व प्रसार के हर प्रकार के लाभदायक साधन पैदा हो जाएँ, और वह ज़माना ख़ुदा के फ़ज़्ल से आ गया है। अत: इस ज़माने में प्रिंटिंग प्रैस द्वारा किताबों के छापने और फैलाने में जो सहूलतें पैदा हो गई हैं वे सबको मालूम हैं। डाकख़ानों के द्वारा सारी दुनिया में सन्देश पहुँचाया जा सकता है। अख़बारों के माध्यम से सारी दुनिया के हालात की ख़बर मिलती है। रेलों के द्वारा यात्राएँ आसान कर दी गई हैं। तात्पर्य यह कि हर दिन जितने नए-नए आविष्कार होते जाते हैं उतनी ही आनबान से मसीह मौऊद के ज़माने की तस्दीक़ होती जाती है और दीन के ग़लबा (विजय) के अवसर निकलते आते हैं। इसलिए यह समय वही समय है जिसकी भविष्यवाणी अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा:-

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ (الصّف:١٠) (लियुज़हिरहू अलद्दीने कुल्लिही)

कहकर फ़रमायी थी। यह वही ज़माना है जो:-

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ

(अल्यौमा अक्मल्तु लकुम् दीनकुम् व अत्मम्तु अलैकुम् नेमती)

(सूर: अल्-माइद: आयत-4)

के विषय को बुलन्द करने वाला और तक्मील इशाअत-ए-हिदायत (अर्थात् हिदायत सम्बन्धी वर्णित समस्त पराकाष्ठागत नियम-क़ानूनों को पूर्ण रूप से प्रचारित व प्रसारित करने) के रूप में पुन: नेमत को पूरी करने का ज़माना है और फिर यह वही युग और जुमा है जिसमें:-

وَ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (सूर: अल्-जुमा आयत नं. 4)

(व आख़िरीना मिनहुम् लम्मा यल्हक़ू बिहिम्)

की पेशगोई पूरी होती है। इस ज़माने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का प्रादुर्भाव प्रतिरूपी रूप में (मसीह मौऊद व महदी मअहूद के रंग में) हुआ है और एक जमाअत सहाबा की फिर क़ायम हुई है। ख़ुदा की ओर से नेमत पूरी करने का ज़माना आ गया है लेकिन थोड़े हैं जो इसे जानते हैं और बहुत हैं जो इसे हँसी-ठट्ठों में उड़ाते हैं। लेकिन वह समय निकट है कि ख़ुदा तआला अपने वादे के अनुसार तेज प्रकट करेगा और अपने ज़ोरदार हमलों से दिखा देगा कि उसका अवतार (सचेतक) सच्चा है।

☆ ☆ ☆

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 03.1.2025 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

वक़्फ़े जदीद के सतासठ्वें (67वें) वर्ष में जमाअत के लोगों की ओर से पेश की जाने वाली क़ुर्बानियों का वर्णन तथा अड़सठवें (68वें) साल के प्रारम्भ की घोषणा

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा एवं सूरः आले-इमरान की आयत संख्या ९३ की तिलावत के बाद इस आयत का अनुवाद बयान करते हुए हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

तुम नेकी को कदाचित नहीं पा सकते जब तक अपनी मन भावन वस्तुओं में से ख़ुदा तआला के लिए ख़र्च न करो, और जो कोई चीज़ भी तुम ख़र्च करो, अल्लाह उसे ख़ूब जनता है। फ़रमाया- एक वास्तविक मोमिन जो अल्लाह तआला की राह की तलाश में रहता है, उसे उन राहों की खोज करते रहना चाहिए जो ख़ुदा तआला की निकटता पाने की रहें हैं। अल्लाह तआला की राह में धन उपयोग में लाने को भी ख़ुदा तआला ने एक नेकी बताया है, इस आयत में भी यही विषय है कि वह धन जिससे तुम प्रेम करते हो, यदि वह ख़ुदा की राह में ख़र्च करोगे तो तब यह बड़ी नेकी होगी। नि:सन्देह अल्लाह तआला हर एक नेकी का बदला देता है, परन्तु इंसान को क्यूँकि धन का मोह होता है इस लिए इसकी ओर विशेष रूप से ध्यान दिलाया गया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस आयत के बारे में फ़रमाया कि धन से मोह नहीं लगाना चाहिए। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम कदापि नेकी को नहीं पा सकते जब तक उन चीज़ों में से अल्लाह की राह में ख़र्च न करो जिन से तुम प्यार करते हो। अगर आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने के साथ इस ज़माने का मुक़ाबला किया जाए तो खेद होता है, क्यूँकि प्राणों से बढ़ कर कोई वस्तु प्यारी नहीं होती और उस ज़माने में प्राण ही देने पड़ते थे। तुम्हारी तरह वे भी पत्नी और बच्चे रखते थे, जान सबको प्यारी लगती है, किन्तु वे सदा इस बात का चाव रखते थे कि अवसर मिले तो अल्लाह तआला की राह में जान क़ुर्बान कर दें। हुज़ूर अलै. ने फ़रमाया- व्यर्थ और तुच्छ चीज़ों को ख़र्च करने पर कोई इन्सान

नेकी का दावा नहीं कर सकता, नेकी का द्वार संकीर्ण है, अत: यह बात मस्तिष्क में बिठा लो कि तुच्छ चीज़ों के ख़र्च करने से कोई उसमें दाख़िल नहीं हो सकता, क्यूँकि स्पष्ट आयत है कि

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ

अर्थात-जब तक अति मनमोहक एवं प्रिय से प्रियतम चीज़ को ख़र्च नहीं करोगे, उस समय तक प्यारा एवं प्रिय होने का स्तर नहीं मिल सकता। आप अलै. फ़रमाते हैं कि क्या सहाबा किराम रज़ी. मुफ़्त में इस स्तर को पहुँच गए? सांसारिक पदों को प्राप्त करने के लिए कितने अधिक ख़र्चे और परिश्रम सहन करने पड़ते हैं तब कहीं जाकर एक तुच्छ पदवी, जिससे मन को शान्ति एवं संतुष्टि प्राप्त नहीं हो सकती, मिलती है। फिर ख़याल करो कि रज़िअल्लहु अन्हुम का पद जो दिल की शान्ति, मन का संतोष एवं मोलाए करीम के प्रसन्न होने का निशान है, यूं ही सरलता पूर्वक मिल गया? फ़रमाया- ख़ुदा ठगा नहीं जा सकता, मुबारक हैं वे लोग जो अल्लाह की खुशी पाने के लिए कष्टों की चिन्ता न करें, क्यूँकि स्थाई ख़ुशी और सदैव के आराम की रोशनी इस अस्थाई कष्ट के बाद मोमिन को मिलती है। दुनिया में इंसान धन से अत्यधिक लगाओ रखता है इसी कारण से स्वप्नफल की विद्या में लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति सपने में देखे कि उसने जिगर निकाल कर किसी को दिया है तो उसका मतलब धन है।

आज अहमदिय्या जमाअत के लोगों ने इस बात को भली-भाँती समझ लिया है कि वास्तविक नेकी तक पहुँचने के लिए इस धन को ख़र्च करना अनिवार्य है, जो प्रियतम चीज़ है। यह नि:सन्देह हज़रत मसीह मौऊद अलै. की तरबियत का प्रभाव है कि आज तक यह बलिदान के स्तर हम देखते चले जा रहे हैं, वे स्तर जो सहाबियों ने स्थापित किए और फिर जिनको हज़रत मसीह मौऊद अलै. के ज़माने में आपके सहाबा रज़ी. ने क़ायम किया। फिर इसके बाद ख़िलाफ़त के हर दौर में ये क़ुर्बानियां हम देखते चले आ रहे हैं, आज तक यही क़ुर्बानियां हमें नज़र आ रही हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं- मैं नि:सन्देह जानता हूँ कि कंजूसी और ईमान एक दिल में जमा नहीं हो सकते.....क़ौम को चाहिए कि हर तरह से इस सिलसिले की सेवा में लगी रहे, धन देकर भी सेवा करने से पीछे नहीं हटना चाहिए। देखो! दुनिया में कोई सिलसिला चन्दे के बिना नहीं चलता..... सब रसूलों के युग में चन्दे जमा किये गए। अत: हमारी जमाअत के लोगों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यदि ये लोग जतन करके एक एक पैसा भी साल भर में दें तो बहुत कुछ हो सकता है। इस हवाले से हुज़ूरे अनवर ने हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. के बलिदानों के विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलै. के कुछ कथन पेश फ़रमाए। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. ने एक अवसर पर हुज़ूर अलै. को लिखा कि हज़रत पीर व मुर्शद! मैं सम्पूर्ण विनयता के साथ निवेदन करता हूँ कि मेरी पूरी धन सम्पत्ति यदि दीन के प्रकाशन में लग जाए तो मैं सफल हो जाऊंगा।

हज़रत खलीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़ी. ने जब वक़फ़े जदीद और तहरीके जदीद की तहरीक का आरंभ किया तो कुछ निर्धन लोगों ने थोड़ी थोड़ी धन राशि पेश की, कोई मुर्गा ले आया, कोई अंडा ले आया, कि हमारे पास जो कुछ था हमने पेश कर दिया। इसी के अंतर्गत हुज़ूरे अनवर ने हज़रत खलीफ़ा रशीदुद्दीन

साहब रज़ी. के आर्थिक सहयोग का विस्तारपूर्वक बयान फ़रमाया तथा सहाबियों एवं बज़ुर्गों की कुछ बातें पेश करने के बाद फ़रमाया कि आज भी हमें ये नमूने हर जगह मिलते हैं। यह रूह हमें आज भी अहमदियों में नज़र आती है। इसके बाद हुज़ूरे अनवर ने मार्शल आई लैंड्स, क़ज़ाकिस्तान, केमरून, नाइजेरिया, गैम्बिया, तंज़ानिया, चेक रिपब्लिक इत्यादि देशों में घटित कुछ क़ुर्बानी के वृत्तांत वर्णन किए।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया इन्डिया से वहां के इन्सपैकटर साहब लिखते हैं कि एक दोस्त हैं, उनका वक़फ़े जदीद का चन्दा चौबीस हज़ार था, कुछ ही दिन शेष थे उनके पास, कुछ धन राशि उनके पास थी जो एक महत्त्वपूर्ण दीन के काम में देनी थी। उन्होंने अल्लाह पर भरोसा करते हुए वह धन राशि चन्दे में दे दी। दूसरे दिन ही उन महोदय को व्यापार की एक बहुत बड़ी धन राशि, जो कहीं फंसी हुई थी वह अचानक मिल गई, तो अल्लाह तआला ने, देखें! उसको कहा कि अच्छा तुम मेरे लिए धन के मोह को छोड़ रहे हो और निजी आवश्यकताओं को त्याग रहे हो, जमाअत की आवश्यकताओं को पूरा करने की चेष्टा कर रहे हो, तो मैं तुम्हारी मदद करता हूँ। तो इस प्रकार अल्लाह तआला सहायता करता है। जमाअत के जो भी ख़र्चे हो रहे हैं, हमारे दुनिया में जो मिशन हैं, तहरीक ए जदीद और वक्फ़ जदीद के चन्दे ही हैं, जो शुद्ध रूप में केंद्र को आते हैं, शेष तो स्थानीय देशों में ही ख़र्च हो जाता है। ये सब ख़र्च इन्हीं चन्दों से हो रहे हैं। अफ़्रीक़ी देशों में जहाँ निर्धनता एक सामान्य बात है, यद्यपि वे चन्दे देते हैं परन्तु वहां मस्जिदें हैं, मिशन हैं, उनको चलाने के लिए धन चाहिए होता है। अफ़्रीक़ा में इस समय 7953 मस्जिदें बन चुकी हैं और 306 मस्जिदें निर्माणाधीन हैं। 1860 मिशन हाउसिज़ काम कर रहे हैं। चार सौ मर्कज़ी मुबल्लिग़ तथा दो हज़ार से अधिक मुअल्लिम काम कर रहे हैं। इसी तरह क़ादियान, साउथ अमरीका, जज़ायर इत्यादि देशों में धन ख़र्च होता है। लिट्रेचर के प्रकाशन तथा वितरण पर व्यय होता है, ये सारे ख़र्चे अल्लाह तआला अपनी कृपा से पूरे करता है।

अल्लाह ताआला ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. को यही फ़रमाया था कि धन तो मैं तुम्हें दूंगा और उस वादे के अनुसार धन दे भी रहा है। अल्लाह तआला जमाअत को सामर्थ्य प्रदान करे कि हम इस धन का सदुपयोग भी कर सकें, अल्लाह तआला सही ख़र्च करने की तौफ़ीक़ दे, कभी इसमें कोई अनियमिता न हो। हुज़ूरे अनवर ने वक़फ़े जदीद के साल की पिछली रिपोर्ट के हवाले से फ़रमाया कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से वक़फ़े जदीद का 67वां साल पूरा हुआ है। इस वर्ष में विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत को ख़ुदा तआला के समक्ष एक करोड़ छत्तीस लाख इक्यासी हज़ार पौंड अर्थात लगभग 14 मिलयन की माली क़ुर्बानी पेश करने की तौफ़ीक़ मिली। यह वसूली गतवर्ष की तुलना में सात लाख छत्तीस हज़ार पौंड अधिक है और इसमें शामिल होने वालों की संख्या 15 लाख 51 हज़ार है, अलहम्दुलिल्लाह।

वसूली की दृष्टि से पहली दस जमातें- बर्तानिया, केनेडा, जर्मनी, अमरीका, भारत, आस्ट्रेलिया, मिडिल ईस्ट की एक जमाअत, इंडोनेशिया, मिडिल ईस्ट की एक जमाअत, बेल्जियम। शामिल होने वालों की वृद्धि की दृष्टि से विशिष्ट जमाअतें- पाकिस्तान, नाईजेरिया, केमरून, गेम्बिया, कोंगो ब्राज़वेल।

भारत के प्रथम दस प्रदेश- केरला, तमिलनाडु, जम्मू एंड कश्मीर, कर्नाटक, तिलंगाना, ओडीशा,

पंजाब, वेस्ट बंगाल, महाराष्ट्र तथा उत्तर प्रदेश। भारत की पहली दस जमाअतें- कोइम्बतूर, क़ादियान, हैद्राबाद, कालीकट, मंजेरी, बंगलौर, मल्या प्ल्यालम, कोलकता, केरंग तथा केरोलाई।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- अल्लाह तआला क़ुर्बानी करने वालों के जान और माल में अत्यधिक बरकतें अता फ़रमाए। नव वर्ष के विषय में दुआओं की तहरीक करते हुए फ़रमाया, दुआएं करें कि यह 2025 का साल जमात के लिए बरकतों वाला साल हो। अल्लाह तआला जमाअत को हर एक फसाद से सुरक्षित रखे। पाकिस्तान में कट्टर पंथियों के दल हैं जो हर तरह का अत्याचार करने का प्रयास करते रहते हैं। अल्लाह तआला इन दुष्टों की पकड़ के जल्दी सामान फ़रमाए, अहमदियों को अपनी शरण में रखे। रबवा पर भी इन लोगों की बड़ी नज़र रहती है, उसकी रक्षा भी अल्लाह तआला फ़रमाता रहे, और फ़रमाया- दरूद शरीफ़ तथा कुछ अन्य दुआओं की ओर मैंने कुछ समय पहले ध्यान दिलवाया था, इसी तरह पाकिस्तान, बंगला देश, शाम एवं अफ्रीक़ा तथा अन्य देश हैं, हर एक देश में अल्लाह तआला अहमदियों को अपनी सुरक्षा में रखे। हर एक अहमदी का कर्तव्य है कि इसके लिए विशेष रूप से स्वयं भी बहुत दुआएं करें, अपने देशों के लिए भी और दुनिया की सामान्य स्थिति और युद्धों की परिस्थितियों के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला उनके बुरे प्रभाव से हर निर्दोष एवं पीड़ित को बचाए।

ये लोग नव वर्ष पर बड़े आयोजन करते हैं लेकिन प्रत्येक केवल अपनी खुशियाँ देखता है, दूसरों की पीड़ा का इन्हें एहसास नहीं है। शक्ति शाली क़ौमें, ग़रीब क़ौमों तथा पीड़ित लोगों पर अत्याचार करती चली जा रही हैं। अल्लाह तआला इस वर्ष में उन सब शक्तियों की योजानएं ध्वस्त कर दे और अल्लाह तआला की वहदानियत को हम दुनिया में क़ायम होता देखें, अल्लाह तआला हमें भी इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

टोल फ्री नम्बर अहमदिया मुस्लिम जमात - 18001032131

☆ ☆ ☆

Asifbhai Mansoori 9998926311

Sabbirbhai 9925900467

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover

E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

LIYAKAT ALI Ph. 9899221402
9899221457

FENLEYROSH

Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790

www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

क़ुर्आन और हदीस से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई की दलीलें और ईमानवर्धक घटनाओं का वर्णन

क़िस्त - 2 अनुवादक : अली हसन एम् ए

समर्थन में प्रकट होने वाले निशानों का वर्णन

फिर समर्थन में प्रकट होने वाले निशानों का वर्णन करते हुए आप अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं:-

''अब्दुलहक़ ग़ज़नवी सुम्मा अमृतसरी ने मुबाहला के बाद अपने सम्बन्ध में मुबाहला के असर के बारे में यह ऐलान किया था कि मेरा भाई मर गया है उसकी पत्नी से मैंने शादी की है और उसको गर्भ ठहर गया है और अब उसको लड़का पैदा होगा और वह मुबाहला का असर समझा जाएगा। लेकिन उस गर्भ का परिणाम यह निकला कि कुछ भी पैदा न हुआ। उसने दावा किया था और मुबाहला का चैलेन्ज दिया था कि यह होगा, लेकिन कुछ भी पैदा न हुआ और अब तक चौदह साल गुज़र गए हैं, नामुरादी और ज़िल्लत की ज़िन्दगी भुगत रहा है। और इसके विपरीत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मुबाहला के बाद मेरे घर में कई लड़के पैदा हुए और कई लाख इन्सान ने बैअत की और कई लाख रुपया आया और दुनिया के किनारों तक सम्मान के साथ मेरी प्रसिद्धि फैल गई और अधिकतर दुश्मन मुबाहला के बाद मर गए और हज़ारों आसमानी निशान मेरे हाथ पर ज़ाहिर हुए।''

(ततिम्मा हक़ीक़तुल् वह्यी, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-22 पृ. 444 हाशिया)

फिर इसी सन्दर्भ में आप अलैहिस्सलाम आगे फ़रमाते हैं कि:-

''हर एक न्यायप्रिय व्यक्ति मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी की किताब को देखकर समझ सकता है कि किस तरह उसने अपने तौर पर मेरे साथ मुबाहला किया और अपनी किताब ''फ़ैज़-ए-रहमानी'' में उसको प्रकाशित कर दिया और फिर उस मुबाहला के केवल कुछ ही दिन बाद मर गया, और किस तरह चिराग़दीन जम्मू वाले ने अपने तौर से मुबाहला किया और लिखा कि हम दोनों में से झूठे को ख़ुदा तबाह करे और फिर इसके केवल कुछ ही दिन बाद ताऊन (प्लेग) से अपने दोनों बेटों सहित मर गया। '' (हक़ीक़तुल् वह्यी, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-22 पृ.71 हाशिया)

जमाअती तरक़्क़ी की घटनाओं का वर्णन

और फिर यह निशान आज भी प्रकट हो रहे हैं। जैसा कि मैंने कहा कि हर दिन जमाअती तरक़्क़ी के नज़ारे हम देखते हैं। दूरदराज़ के इलाक़ों में बसने वाली विभिन्न क़ौमों के लोगों की अल्लाह तआला रहनुमाई फ़रमाता है। मुसलमान हों या ईसाई हों या नास्तिक हों, कई लोगों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा इस्लाम की सच्ची शिक्षा का पता चला है तो वह जमाअत में शामिल होते हैं। किसी को अल्लाह तआला ख़्वाब के द्वारा या किसी विशेष निशान द्वारा इस ओर ध्यान आकर्षित करता

है कि अहमदियत, सच्चाई और सच्चे इस्लाम की ओर ले जाने वाला एक रास्ता है। जहाँ अहमदियों को कई समर्थनपूर्ण निशान दिखाकर उनके ईमान को बढ़ाता है वहाँ दूसरों पर भी अहमदियत की सच्चाई प्रकट करता है।

आजकल ख़ुदा के समर्थनपूर्ण नित् नए निशान जो अल्लाह तआला ज़ाहिर कर रहा है कि किस तरह जमाअत अहमदिया फैल रही है उसके कुछ उदाहरण भी मैं प्रस्तुत कर देता हूँ:-

गिनीबसाओ (अफ्रीका महाद्वीप)

गिनीबसाओ एक देश है जहाँ आज इस समय जलसा भी हो रहा है, वहाँ जमाअत के एक सदस्य इब्राहीम साहिब हैं। एक दिन वह अपने मित्रों के साथ बैठे थे तभी पड़ोस के गाँव के एक इमाम साहिब वहाँ आए और जमाअत के ख़िलाफ़ बोलना शुरू कर दिया। इस पर इब्राहीम साहिब ने कहा कि मैं अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सदस्य हूँ और जो कुछ आप कह रहे हैं वह पूर्णत: झूठ है। अहमदिया मुस्लिम जमाअत अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मानने वाली सच्ची जमाअत है और जिस इमाम महदी के आने की पेशगोई हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने की थी उनको मानने वाली जमाअत है। आप एक इमाम होकर जमाअत के ख़िलाफ़ झूठ फैला रहे हैं, यह आपको शोभा नहीं देता। इस पर उस इमाम को बहुत ग़ुस्सा आया और कहने लगा कि:-

अल्लाह तआला हमारे बीच फ़ैसला करेगा। यदि मैं झूठ बोल रहा हूँ तो अल्लाह तआला मुझे सज़ा दे, और यदि तुम झूठ बोल रहे हो तो तुम्हें सज़ा मिले।

यह बात कहकर वह अपने गाँव की ओर चला गया। कुछ ही देर बाद सूचना मिली कि गाँव के बाहर एक एक्सीडेन्ट हुआ है जिसमें उसकी एक टाँग टूट गई है। जब यह सूचना गाँव पहुँची तो उनके मित्र जो बातचीत के समय वहाँ बैठे हुए थे बेझिझक कहने लगे कि नि:सन्देह अहमदियत सच्ची है, जिसका निशान अल्लाह तआला ने आज हमें दिखाया है। फिर उन्होंने अहमदियत क़ुबूल कर ली।

तन्ज़ानिया

तन्ज़ानिया के गीटा रीजन में न्यामूँगो एक गाँव है। तब्लीग़ के दौरान वहाँ एक ख़ानदान से हमारे प्रतिनिधि मंडल की मुलाक़ात हुई। जमाअत के बारे में उन्हें विस्तारपूर्वक बताया गया और जमाअत से छपने वाला अख़बार उन्हें पढ़ने के लिए दिया गया, जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फोटो भी थी। कुछ दिनों के बाद उन्होंने बताया कि:-

हमें तो ज़माने के इमाम की फोटो देखकर एक अजीब चैन सकून महसूस हो रहा है।

अत: उस ख़ानदान के सभी लोग बैअत करके जमाअत में दाख़िल हो गए। अब एक तरफ़ तो यह दुष्प्रकृति मौलवी-मुफ़्ती पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में भी हैं, कई ऐसे हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फोटो को अपने पायदान में रखते हैं और पाँवों से मसलने की कोशिश करते हैं। लेकिन ख़ुदा ने ऐसे भी नेक फ़ितरत (सत्प्रकृति) लोग पैदा किए हैं जिनके लिए यह फोटो भी चैन सकून का कारण बन रही है। हमारे मुख़ालफ़ीन (विरोधी) समझते हैं कि उनकी मुख़ालिफ़त अहमदियत की

तरक़्क़ी की राह में रोक बन सकती है और यह दावा करते हैं कि हम अहमदियत को दुनिया से मिटा देंगे, (नऊज़ुबिल्लाह) और दुनिया के आख़िरी कोने तक इसका मुक़ाबला करेंगे। लेकिन अल्लाह तआला उनकी मुख़ालिफ़त में भी अहमदियत की सच्चाई के निशान दिखाता है।

अत: तन्ज़ानिया से एक नवअहमदी कहते हैं कि मेरा नाम अब्दुल्लाह है। अहमदी होने के बाद मैंने अपने लिए यह नाम पसन्द किया है। कहते हैं :

मेरे गाँव में कुछ समय पहले जमाअत अहमदिया के मुअल्लिम तब्लीग़ के उद्देश्य से आए तो कुछ लोगों ने उनकी बातें सुनकर अहमदियत क़बूल कर ली। मैंने उस समय बैअत नहीं की थी लेकिन अधिक जानकारी हासिल करने के लिए मुअल्लिम साहिब का टेलीफ़ोन नम्बर लिख लिया। जब मुअल्लिम साहिब वापस चले गए तो मैंने देखा कि कुछ दूसरे मुसलमान बड़ी-बड़ी गाड़ियों में आए हैं और उन्होंने नवअहमदियों को कहना शुरू किया कि अहमदी झूठे हैं, ये मुसलमान नहीं हैं इत्यादि-इत्यादि। यह देखकर मैंने अहमदिया जमाअत के मुअल्लिम साहिब को फ़ोन किया कि मैंने आपकी बातें सुनी हैं लेकिन अभी बैअत नहीं की। आपके जाने के बाद यहाँ मुसलमानों का एक गिरोह आया था जिसने षडयन्त्र रचा और हमें आपके ख़िलाफ़ भड़काने की कोशिश की है। यह मेरे लिए एक खुला-खुला निशान है कि आप सच पर हैं और मैं भी बैअत करके जमाअत अहमदिया में दाख़िल होना चाहता हूँ। सम्भवत: यदि यह मुख़ालिफ़त न होती तो वे कुछ समय और इन्तिज़ार करते और अधिक तहक़ीक़ करते, लेकिन उस मुख़ालिफ़त ने तुरन्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई उन पर स्पष्ट कर दी और अल्लाह तआला ने क़बूलियत के लिए उनका दिल खोल दिया।

भारत

भारत से वहाँ के मुबल्लिग़ इन्चार्ज लिखते हैं कि तब्लीग़ के उद्देश्य से हम इम्फाल गए। वहाँ ताजिर साहिब नामक एक व्यक्ति से मुलाक़ात हुई। उन्होंने मिलकर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की, कहने लगे कि मैं आप लोगों की बहुत दिनों से प्रतीक्षा कर रहा था। उन्होंने बातचीत के दौरान अपने बैग से दो-तीन काग़ज निकाले जिन पर बैअत की शर्तें और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में क़ुरआन और हदीस की पेशगोइयाँ लिखी हुई थीं। उन्होंने यह काग़ज ख़ुद तैयार करके अपने मित्रों में बांटने के लिए रखे हुए थे। कहने लगे कि:-

मुझे जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में पता चला तो मैंने सन् 2016 ई. में ही जमाअत अहमदिया में शामिल होने का ऐलान कर दिया था।

रेडियो से या किसी अन्य माध्यम से उन्हें यह सूचना मिली तो उन्होंने ऐलान कर दिया कि मसीह मौऊद आ चुका है और मैं उनकी बैअत में दाख़िल होता हूँ। जिस पर लोगों ने मुख़ालिफ़त करना शुरू कर दिया, बल्कि कहते हैं कि एक दिन मुख़ालिफ़त करने वाले इकट्ठे होकर मुझे मारने और तौबा कराने के लिए निकले, लेकिन संयोग से ऐसा हुआ कि उस दिन भीषण भूकम्प (ज़लज़ला) आया और जो लोग मुझे मारने और तौबा कराने के लिए आने वाले थे उन लोगों का भीषण नुकसान हुआ। जिसके कारण वे

मुझ तक पहुँच न सके। कहते हैं कि:-

मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूँ कि यह भूकम्प एक निशान के रूप में आया जो कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक निशान है।

तब से मैं आप लोगों की प्रतीक्षा में था। इसके बाद उन्होंने विधिवत् बैअत कर ली।

तन्ज़ानिया

इसी तरह तन्ज़ानिया की एक जगह है काबूगूज़ू। यहाँ भी एक इस्माईल साहिब नामक नए अहमदी हैं जो खेतीबाड़ी का काम करते हैं। वहाँ अफ्रीका में वर्षा के दिनों में कभी-कभी भीषण बिजली कड़कती है। उनके इलाक़े में जहाँ वह काम कर रहे थे पास में ही आसमानी बिजली गिरी। कहते हैं कि बिजली इतनी भयानक थी कि उसने मुझे उठाकर दूर फेंक दिया और मैं बेहोश हो गया। काफ़ी देर बाद होश आया, वर्षा तेज़ हो रही थी, वर्षा में भीगने के कारण मैं बहुत बीमार हो गया था, शारीरिक कमज़ोरी के कारण हिल भी नहीं सकता था और न ही आवाज़ देकर किसी को मदद के लिए बुला सकता था। जंगल के निकट खेत होने के कारण वहाँ लोगों का आना-जाना भी कम था।

मैंने अल्लाह तआला से दुआ की कि मुझे अहमदियत की सच्चाई का निशान दिखा।

अत: एक व्यक्ति मेरे निकट आया और मुझे कीचड़ में लतपथ देखकर समझा कि शायद मेरी मृत्यु हो चुकी है। मैंने कुछ हिम्मत करके अपना हाथ उठाकर हिलाया जिससे उसे अन्दाज़ा हुआ कि मैं अभी ज़िन्दा हूँ। उस व्यक्ति ने मुझे गाँव तक पहुँचाने में मदद की। इस तरह अहमदियत की बरकत से मुझे नई ज़िन्दगी मिली। बाद में पता चला कि गाँव में, हमारे खेत में बिजली गिरने और मेरी गुमशुदगी के कारण यह ऐलान कर दिया गया था कि मेरी मृत्यु हो चुकी है। कहते हैं कि उस दिन मैंने जमाअत की सच्चाई का एक बड़ा निशान देखा, कहते हैं नि:सन्देह यह अल्लाह की जमाअत है और हम मरते दम तक इससे जुड़े रहेंगे, यह निशान मेरे लिए है। किस तरह अल्लाह तआला ईमानों को मज़बूत करता है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई साबित करता है। जिसकी प्रकृति नेक हो वही इससे फ़ायदा उठा सकता है, गन्दी सोच के मौलवी-मुफ़्ती इससे फ़ायदा नहीं उठा सकते।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए गए वादे के अनुसार अल्लाह तआला स्वयं किस तरह लोगों की रहनुमाई फ़रमाता है। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी ज़िन्दगी में लोगों के अहमदियत क़ुबूल करने के बहुत से वाक़ियात (किस्से) बयान किए हैं। लेकिन यह सिलसिला बन्द नहीं हुआ बल्कि आज भी हम ऐसे बहुत से निशान देखते हैं। कुछ घटनाएँ प्रस्तुत कर देता हूँ:-

कतूनो शहर के निकट हुवैदोपसीजा नामक एक इलाक़ा है। वहाँ से एक ईसाई मित्र जिनका सम्बन्ध ईसाइयत के सलीसत (CELESTE) मत से है वह हमारी मस्जिद में आए और इस्लाम के बारे में कुछ प्रश्न किए। उन्हें इस्लामी शिक्षा और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे के बारे में बताया गया। कहने लगे कि मैं जमाअत अहमदिया में दाख़िल होना चाहता हूँ, मुझे समझाओ नहीं। पूछने पर उन्होंने बताया कि वस्तुत: अल्लाह तआला ने स्वयं मेरी रहनुमाई की है। कहते हैं कि:-

कुछ दिन पहले मैंने ख़्वाब में दो बुज़ुर्गों (महापुरुषों) को देखा था। उनमें से एक ने मुझे संकेत करके कहा कि तुम जिस मज़हब पर क़ायम हो वह हिदायत का रास्ता नहीं, और दूसरे जो बुज़ुर्ग (महापुरुष) थे वह ख़्वाब में निरन्तर अल्लाहो अकबर, अल्लाहो अकबर कह रहे थे।

इसलिए ख़्वाब के बाद मुझे यह संकेत मिल गया कि इस्लाम ही सच्चा मज़हब है। इसके बाद जब उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और मेरी फोटो दिखाई गई तो आश्चर्यचकित होकर कहने लगे कि यही तो दोनों लोग थे जिन्होंने ख़्वाब में मेरी रहनुमाई की थी।

अत: वह भी अपने पूरे परिवार समेत ईसाई मज़हब छोड़कर अहमदियत अर्थात् हक़ीक़ी इस्लाम में दाख़िल हो गए और उनके घर के पास उनका जो चर्च था उसको उन्होंने मस्जिद बना लिया। इस तरह अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मदद के लिए लोग भेजता है।

अलबानिया

अलबानिया यूरोप का एक इलाक़ा है यहाँ जाफ़िर नामक एक नौजवान हैं। इकोनामिक्स में एम. ए. किया हुआ है। पहले तो उन्होंने जमाअत के बारे में इन्टरनेट से सुना था और जमाअत के ख़िलाफ़ झूठ और छल से भरी जो किताबें पाई जाती हैं उनको पढ़ा हुआ था। इसलिए जब मस्जिद आते तो कई प्रकार के सवाल लेकर आते, क्योंकि मुख़ालिफ़त में झूठ और छल से भरी हुई किताबें पढ़ी हुई थीं। वहाँ के नायब सदर बुयार रामाए साहिब ने उनसे विस्तारपूर्वक बातचीत की और तर्क एवं प्रमाणों के साथ उनके प्रश्नों के उत्तर दिए और उस नौजवान से कहा कि हज़रत अक़दस हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें। अत: उन्होंने पुस्तकों को पढ़ना शुरू कर दिया। सच्चे इस्लाम की वास्तविकता उन पर खुलने लगी। अहमदियत के बारे में और हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी के बारे में उनको पता लगा। पहले बातों-बातों में वे ''मिर्ज़ा साहिब'' कहा करते थे। फिर इसके इसकी जगह उन्होंने The Messiah का शब्द बोलना शुरू कर दिया और अधिक अध्ययन एवं छानबीन करने लगे। अन्तत: जब उन्होंने इस्लामी उसूल की फ़िलास्फ़ी का अलबानियन अनुवाद पढ़ा तो यह उनको इतनी अच्छी लगी कि दो बार उन्होंने शुरू से अन्त तक उसको पढ़ा। उसी दौरान:-

उन्होंने ख़्वाब में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देखा, जिसमें हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने उन्हें ख़िलाफ़त से जुड़ने का आदेश दिया।

अत: इसके बाद वे बैअत करके जमाअत अहमदिया में दाख़िल हो गए, और अब यह नियमित रूप से जमाअत की वेबसाइट को पढ़ते हैं और जमाअत की ओर से की जाने वाली क़ुरआन मजीद की आयतों की तफ़्सीर की भी प्रतीक्षा करते रहते हैं कि कब वह आए और मैं पढ़ूँ, और बड़ी निष्ठा से जमाअत में शामिल हुए।

तन्ज़ानिया

तन्ज़ानिया की एक और जमाअत ''लुहूहा'' है। वहाँ की एक महिला ने आकर बताया कि रोज़ाना ख़्वाब में एक व्यक्ति आता है और कहता है कि इस्लाम क़ुबूल कर लो और अमन में आ जाओ। उनको

हमारे मुअल्लिम साहिब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर दिखाई तो उस महिला ने कहा कि यही वह व्यक्ति (महापुरुष) है जो मेरे ख़्वाब में आता है।

अत: उन्हें इस्लाम और अहमदियत के बारे में विस्तार से बताया गया, जिस पर उन्होंने बैअत कर ली।

क़िर्ग़िस्तान

क़िर्ग़िस्तान रूसी राज्यों में से एक राज्य है। यहाँ बिश्कीक से सरजानोवा साहिबा कहती हैं कि मैं क़िर्ग़िस्तान के पूर्व मुफ़्ती चौबाक हाजी जलीलो को सुना करती थी और नमाज़ भी पढ़ती थी, मुसलमान थी, वहाँ बहुत सारे मुसलमान राज्य हैं। मैंने देखा कि मेरे भाई तौरारबेक ने भी नमाज़ पढ़ना शुरू कर दिया है और उसमें अच्छा बदलाव आ गया है। मुझे पता चला कि उसका एक दोस्त है जो अहमदी है और वही उसको मज़हब के बारे में बताता रहता है। फिर एक दिन मेरा भाई दज्जाल के बारे में एक वीडियो देख रहा था। पूछने पर उसने दज्जाल की हक़ीक़त के बारे में मुझे बताया। उस समय तो मैंने सोचा कि मेरा भाई ग़लत रास्ते पर है, लेकिन इसके बावजूद मुझे उसके उदाहरणों से दिलचस्पी पैदा हो गई। कुछ समय बाद मेरे भाई के अहमदी दोस्त ने मुझे भी मज़हब और अहमदियत के बारे में बताना शुरू किया। उसने क़ुरआन और हदीस से साबित किया कि अहमदियत ही सही रास्ता है। इसके बाद मुझे एहसास हुआ कि मज़हब कोई कहानी नहीं, बल्कि एक हक़ीक़त है। फिर कहती हैं मैंने ख़्वाब में देखा कि मेरे भाई का वही अहमदी दोस्त मुझे अहमदिया मुस्लिम जमाअत में लेकर जा रहा है। इस पर मैंने अहमदियत क़ुबूल कर ली और इस बात पर ईमान ले आई कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम ही मसीह मौऊद व महदी मअहूद हैं।

इण्डोनेशिया

इण्डोनेशिया के एक नए अहमदी हैं, कहते हैं कि मुझे बताया गया था कि जमाअत अहमदिया गुमराही में पड़ी हुई है। मैं जमाअत अहमदिया में शामिल होने की बजाय एक ऐसी जमाअत में शामिल हो गया जो सरकार की मुख़ालिफ़त करने वाली जमाअत थी। 1992 ई. में उस जमाअत का अमीर पकड़ा गया तो मैंने उसके उत्तराधिकारी के हाथ पर बैअत कर ली। उस समय मैंने इस्तिख़ार: किया (अर्थात् ख़ुदा से भलाई माँगी)।

ख़्वाब में एक बुज़ुर्ग (महापुरुष) को देखा, उन्होंने कहा कि मैं ही इमाम महदी हूँ, मैं मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद हूँ। उस ख़्वाब के एक हफ़्ते बाद जब मैंने उस जमाअत को जो सरकार की विरोधी थी छोड़ना चाहा तो मुझे मजबूर किया गया कि तुम उसकी बैअत में रहो वर्ना क़त्ल कर दिये जाओगे। अतएव वह कहते हैं कि उसके एक साल के बाद एक अहमदी से मेरी मुलाक़ात हुई, उसने मुझे तब्लीग़ की। उस समय मैंने उसको कहा कि अगर तुम्हारा इमाम नबी है तो ज़रूर उसने कुछ दावे भी किए होंगे, किताबों में भी लिखे होंगे, वे मुझे दो। तो उन्होंने मुझे किताब दी। उसी रात एक बार फिर मैंने ख़्वाब में एक मस्जिद देखी। जिस पर ''अहमदिया'' लिखा हुआ था। वहाँ एक इण्डियन वेशभूषा पहने हुए आदमी खड़ा था, जो मुझे कहने लगा कि तुम इसमें दाख़िल हो जाओ। बहरहाल तीन दिन के बाद उसने मुझे किताब

'' इस्लामी उसूल की फ़िलास्फ़ी'' भी दी।

जब मैंने किताब खोली तो शुरू में ही हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम की तस्वीर थी। उनका चेहरा देखकर याद आया कि यह तो बिल्कुल वही बुज़ुर्ग (महापुरुष) हैं जिन्हें पिछले साल मैंने ख़्वाब में देखा था। फिर मैंने उस किताब को शुरू से अन्त तक पढ़ा और बैअत कर ली।

इण्डोनेशिया से ही एक और घटना है। एक नौजवान को तब्लीग़ की गई उसने तुरन्त बैअत कर ली। वापस जाने से पहले कुछ किताबें दी गईं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर वाले BROCHURE (लीफलेट) भी दिए गए। जब नौजवान घर पहुँचा तो उसके पिता ने उससे पूछा यह क्या है, इसमें किसकी तस्वीर है। जब उसने बताया कि यह (युगावतार) इमाम महदी की तस्वीर है और मैंने बैअत कर ली है तो उसने कहा कि अच्छा फिर मैं भी बैअत करता हूँ। अल्लाह तआला ने तुरन्त उसका हृदय परिवर्तन कर दिया।

माली

माली के सुकासू रीजन से आदम साहिब नामक एक व्यक्ति बैअत के लिए मिशन हाउस आए। जब उनसे बैअत का कारण पूछा गया तो उन्होंने बताया कि वह ''रेडियो अहमदिया'' बड़ी शौक़ से सुनते हैं। एक दिन रेडियो सुनते-सुनते उनकी आँख लग गई। उन्होंने ख़्वाब में देखा कि वह भागते-भागते एक अत्यन्त सुन्दर बाग़ में पहुँचे हैं जहाँ हर प्रकार के फूल और फल मौजूद हैं। उसी बाग़ में एक ओर उन्होंने देखा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने ख़ुल्फ़ा और सहाबा किराम के साथ बैठे हैं।

जब वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर हुए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें एक व्यक्ति की ओर संकेत करके बताया कि वह इमाम महदी अलैहिस्सलाम हैं, जाकर उनकी बैअत करो।

आदम साहिब ने कहा कि इस ख़्वाब के बाद अगर अब भी बैअत न करूँ तो मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नाफ़रमानी करने वाला बनूँगा। इसलिए तुरन्त मेरी बैअत लें।

अत: क्या ये समर्थन और समर्थनपूर्ण निशान अल्लाह तआला की ओर से इस बात के मार्गदर्शन के प्रमाण नहीं हैं कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ही वही मसीह मौऊद और महदी मअहूद हैं जिनके आने की ख़बर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दी थी। यदि दिल साफ़ हो, नीयत नेक हो तो इन दिखावटी और रूढ़िवादी मौलवी-मुफ़्तियों के पीछे चलने की बजाय हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि अल्लाह तआला से दुआ करे और उससे रहनुमाई माँगे और मुख़ालिफ़त करने की बजाय जमाअत के बारे में सही निर्णय ले।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते है:-

''अल्लाह तआला ने इरादा किया है कि वह इस सिलसिला को बढ़ाए। अत: कौन है जो इसे रोक ले? क्या तुम नहीं जानते कि बादशाह सब कुछ कर सकते हैं। फिर वह जो धरती-आसमान का बादशाह है कब थक सकता है? आज से पच्चीस वर्ष बल्कि इससे भी बहुत पहले ख़ुदा तआला ने ऐसे वक़्त में

मुझे ख़बर दी कि एक आदमी भी मेरे साथ न था और कभी साल भर में भी कोई ख़त न आता था। उस गुमनामी की हालत में मैंने जो दावे किए वे बराहीन अहमदिया में छपे हुए मौजूद हैं और यह किताब अपनों और परायों के पास मौजूद है बल्कि हिन्दुओं, ईसाइयों तक के पास भी है, मक्का, मदीना और क़ुस्तुनतुनिया तक भी पहुँची है। इसे खोलकर देखो कि उस समय ख़ुदा तआला ने फ़रमाया:-

يَأْتُوْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ وَ يَأْتِيْكَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ۔

अर्थात् तेरे पास दूर-दूर से लोग आएँगे और जिन रास्तों से आएँगे उन रास्तों में गड्ढे पड़ जाएँगे। फिर फ़रमाया:- कि लोग बड़ी अधिकता से आएँगे तू उनसे थकना नहीं और उनसे किसी प्रकार का क्रोध और दुर्व्यवहार न करना। यह स्वाभाविक बात है कि जब लोगों की अधिकता होती है तो इन्सान उनकी मुलाक़ात से घबरा जाता है और कभी मुँह फेर लेता है, जो एक प्रकार का दुर्व्यवहार है। अत: उसे इस बात से मना किया और कहा कि उनसे थकना नहीं और मेहमान नवाज़ी के कर्तव्य पूरे करना। यह ख़बर ऐसे हालात में दी गई थी कि जब कोई भी न आता था और अब तुम सब देख लो कि कितनी संख्या में मौजूद हो। यह कितना बड़ा निशान है? इससे अल्लाह तआला का अन्तर्यामी होना साबित होता है। ऐसी ख़बर अन्तर्यामी ख़ुदा के बिना कौन दे सकता है, न कोई ज्योतिषी और न कोई हाथ की रेखाएँ देखने वाला कह सकता है। इन हालात पर जब एक स्वच्छ प्रकृति मोमिन ग़ौर करता है तो उसे आनन्द आता है। वह विश्वास करता है कि एक ख़ुदा है जो चमत्कारी भविष्यवाणियाँ बताता है। अत: इस भविष्यवाणी में उसने बड़ी अधिकता से मेहमानों के आने-जाने की सूचना दी। फिर चूँकि उनके खाने-पीने के लिए काफ़ी सामान चाहिए था और उनके ठहरने के लिए मकानों का प्रतिबन्ध होना चाहिए था तो इसके लिए साथ ही शुभसूचना दी कि:- يَأْتِيْكَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ

(यातीक मिन् कुल्लि फ़ज्जिन् अमीक़)

आज अब क़ादियान को देखें, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से बहुत से गेस्ट हाऊस बन चुके हैं और इमारतें बन चुकी हैं। अब ग़ौर करो कि जिस काम को अल्लाह तआला ने ख़ुद करने का वादा और इरादा किया है, कौन है जो उसकी राह में रोक हो। वह ख़ुद सारी ज़रूरतों को पूरा करता है। यह बात इन्सान की ताक़त से बाहर है कि इतने साल पहले एक घटना की शुभसूचना दे कि उतने वर्षों में एक बच्चा भी पैदा होकर बाप बन सकता है। यह ख़ुदा तआला का एक बहुत बड़ा निशान है। यही कारण है कि ख़ुदा तआला की किताबों में लिखा है कि सत्यनिष्ठ की निशानी पेशगोई है और यह बहुत बड़ा निशान है जिस पर ग़ौर करना चाहिए। क़ुरआन करीम से ज्ञात होता है कि ईमान गहन चिन्तन-मनन करने से बढ़ता है। जो लोग अल्लाह तआला के निशानों पर ग़ौर नहीं करते उनका क़दम डगमगाने वाली जगह पर होता है। यह बिल्कुल सच्ची बात है कि इन्सान अपने ईमान में उस समय तक तरक़्क़ी नहीं कर सकता जब तक ख़ुदा तआला के कथनों-कार्यों और शक्तियों पर गहराई से चिन्तन-मनन न करे। अत: यह सिलसिला इसी उद्देश्य के लिए क़ायम हुआ है ताकि अल्लाह तआला पर विश्वास बढ़े.....किसी दूसरे मज़हब वाले को यह सामर्थ्य और साहस कहाँ कि वह ऐसे नवीनतम निशान प्रस्तुत करे। जमाअत के लोग ख़ूब समझ

सकते हैं कि कितने निशान ज़ाहिर होते रहते हैं। यह केवल ख़ुदा तआला का काम है किसी और को इसमें दख़ल नहीं।'' (मलफ़ूज़ात जिल्द-8 पृ. 369-371 संस्करण 1984)

आज आप लोग जो क़ादियान में जलसे में शामिल हैं और वे सब लोग जो अपने देशों में जलसे में शामिल हैं इस बात को सत्यापित कर रहे हैं कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम नि:सन्देह वही (युगावतार) मसीह मौऊद व महदी मअहूद हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पेशगोइयों के अनुसार अवतरित हुए और जिनके साथ अल्लाह तआला का समर्थन हमेशा रहा है और रहेगा। इन्शाअल्लाह।

हर अहमदी को भी यह प्रण करना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव के उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमने अनवरत प्रयास करना है। अपनी भौतिक एवं आध्यात्मिक हालतों का जायज़ा लेते रहें। उनको बेहतर करने की कोशिश करते रहें।

दुआओं का आह्वान

अब इसके बाद हम दुआ भी करेंगे, दुआ में अपने फ़िलिस्तीनी भाई-बहनों और बच्चों को याद रखें कि अल्लाह तआला जल्द उन्हें ज़ुल्म की चक्की से निकाले।

उन मुसलमानों के लिए भी दुआ करें जिनकी अपनी सरकारों ने अपने स्वार्थों के लिए उन्हें ज़ुल्म का निशाना बनाया हुआ है। पाकिस्तानी अहमदियों के लिए भी दुआ करें, असीराने राह-ए-मौला के लिए भी दुआ करें।

इन्शाअल्लाह कल से नया साल शुरू हो रहा है। आज रात तहज्जुद में नए साल के शुभ होने और दुनिया से अन्याय एवं अत्याचार के अन्त होने के लिए भी दुआ करें। लोगों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव के उद्देश्य को समझने के लिए भी दुआ करें और उन्हें स्वीकार करने के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला सब को अपनी सुरक्षा में रखे।

क़ादियान में इस समय जलसे की हाज़िरी 14,930 है, जो लगभग पन्द्रह हज़ार के निकट है, जिसमें 42 देशों के सदस्य शामिल हैं। दुआ करें कि अल्लाह तआला यह जलसा हर लिहाज़ से बाबरकत करे और विशेष रूप से नव वर्ष के हर तरह से बाबरकत होने के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला मुस्लिम क़ौम पर भी रहम करे और आने वाले वर्षों में जमाअत अहमदिया को पहले से बढ़कर उन्नति प्रदान करे। आओ सब मिलकर दुआ कर लें, (दुआ)।

जो देश इस समय (M.T.A. के माध्यम से) सीधे तौर पर शामिल हैं उनमें सैनीगाल, टोगो, गिनी कनाकरी और गिनीबसाओ हैं। अल्लाह तआला इन सब के जलसे भी कामियाब करे और उनके ईमान और यक़ीन को भी बढ़ाए। अस्सलामो अलैकुम।

(अल-फ़ज़्ल इन्टरनेशनल 20 जुलाई सन् 2024 ई. पृ. 1-7)

☆ ☆ ☆

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

साफ और स्वच्छ पानी को पीना कितना ज़रूरी है

हमारी बॉडी का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा पानी से बना होता है और ये हमारे शरीर के कई जरूरी फंक्शन्स में शामिल होता है। साफ पानी न सिर्फ प्यास बुझाने का काम करता है, बल्कि बॉडी के टेम्परेचर को कंट्रोल करने, न्यूट्रिएंट्स को ट्रांसपोर्ट करने, टॉक्सिन्स को बाहर निकालने और जोड़ों और मसल्स को लुब्रिकेट करने में भी मदद करता है। शरीर के सही तरीके से काम करने के लिए साफ और हेल्दी पानी पीना बहुत जरूरी है। यह डाइजेशन को रेगुलेट करता है और ब्रेन, जिसमें 73 प्रतिशत पानी होता है, को बेहतर तरीके से काम करने में मदद करता है। हेल्दी पानी हमारी स्किन को ग्लोइंग और यंग बनाए रखता है, परफॉर्मेंस को बूस्ट करता है और एनर्जी लेवल को बढ़ाता है।

पानी की क्वालिटी का ध्यान क्यों ज़रूरी है?

आजकल की लाइफस्टाइल में हम जो पानी पीते हैं, उसकी क्वालिटी पर ध्यान देना बहुत जरूरी हो गया है। अगर पानी में पॉल्यूटेंट्स और हानिकारक बैक्टीरिया होते हैं, तो ये न केवल हमारे हेल्थ के लिए खतरनाक हो सकते हैं, बल्कि पर्यावरण पर भी इसका असर पड़ सकता है।

जोड़ों और मसल्स के लिए फायदेमंद

पानी एक नेचुरल लुब्रिकेंट की तरह काम करता है, जो जोड़ों और मसल्स को लचीलापन देता है और फ्रिक्शन कम करता है। मिनरल्स जैसे कैल्शियम और मैग्नीशियम से भरपूर पानी हड्डियों और मसल्स को मजबूत बनाता है और क्रैम्प्स को रोकने में मदद करता है।

डाइजेशन और न्यूट्रिएंट्स का बेहतर एब्जॉर्प्शन

पानी सही मात्रा में पीने से डाइजेस्टिव सिस्टम सही तरीके से काम करता है और कब्ज जैसी समस्याएं कम होती हैं। स्टडीज के मुताबिक, सही हाइड्रेशन कब्ज के चांस को 44 प्रतिशत तक कम कर सकता है।

स्किन के लिए वरदान

हाइड्रेटेड स्किन न सिर्फ यंग दिखती है, बल्कि एजिंग की प्रक्रिया को भी धीमा करती है। एक स्टडी के मुताबिक, पानी पीने से स्किन की थिकनेस और इलास्टिसिटी बढ़ती है, जिससे झुर्रियां कम होती हैं। इसके अलावा, साफ और हेल्दी पानी पीने से स्किन पर मुंहासे और दूसरी स्किन प्रॉब्लम्स का खतरा कम हो जाता है।

मेंटल हेल्थ के लिए भी है ज़रूरी

साफ पानी न सिर्फ हमारे शरीर की फिजिकल हेल्थ को सपोर्ट करता है, बल्कि यह हमारी मेंटल हेल्थ पर भी असर डालता है। पानी पीने से हैंगओवर, सिरदर्द और डिप्रेशन जैसी समस्याओं में भी राहत मिलती है। इसके साथ ही यह प्रोडक्टिविटी को बढ़ाने और हमारे ओवरऑल हेल्थ को बेहतर बनाने में मदद करता है।

LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

Prop : Sk. Ishaque
FFT Fruits
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal
flipkart
amazon.com
Paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी के कुछ पहलू

हज़रत अक़्दस अलैहिस्सालाम का जन्म, बचपन का समय तथा पिता जी का वर्णन

हज़रत मिर्ज़ा साहब के परिवार के संक्षिप्त हालात लिखने के पश्चात् हम आप के हालात का वर्णन करने की ओर ध्यान देते हैं जैसा कि आरम्भ में वर्णन किया गया है कि आप का जन्म 1836 या 1837 में हुआ था जो कि आप के पिता जी की उन्नति का समय था क्योंकि उन को उस समय जागीर के कुछ गांव तथा महाराजा रणजीत सिंह की सैनिक सेवा के कारण बहुत मान प्राप्त था परन्तु अल्लाह की इच्छा यह थी कि आप का पालन पोषण ऐसे वातावरण में हो जहां आप का ध्यान ख़ुदा तआला की ओर हो इसी कारण आप के जन्म के तीन वर्ष पश्चात् ही महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के साथ ही सिक्ख राज्य का पतन हो गया इस पतन के साथ आप के पिता जी भी विभिन्न चिन्ताओं में पढ़ गए तथा पंजाब के अंग्रेज़ों के मिल जाने के अवसर पर उन की सम्पत्ति छीन ली गर्स तथा हज़ारों रुपयें व्यय करने के पश्चात् भी वे अपनी सम्पत्ति वापित प्राप्त ना कर सके जस का दुख उनके दिल पर सदा रहा हज़रत मिर्ज़ा साहब अपनी एक पुस्तक में लिखते हैं कि ः-

"मेरे पिता जी अपनी असफ़लताओं के कारण अधिकतर दुखी तथा परेशान रहते थे उन्होंने मुकदमों की पैरवी में लगभग सत्तर हज़ार रुपये व्यय किये जिस का परिणाम अन्त में असफ़लता ही था क्योंकि हमारे पूर्वजों के गांव लम्बे समय से हमारे अधिकार से निकल चुके थे उन का वापिस आना एक झूठा ख्याल था इस असफ़लता के कारण मेरे पिता जी बहुत अधिक ग़म दुख तथा बैचेनी में जीवन व्यतीत करते थे तथा मुझे उन हालात को देख कर पवित्र तबदीली ग्रहण करने का अवसर प्राप्त होता था क्योंकि हज़रत वालिद साहिब का कठिन जीवन मुझे इस निष्काम सेवा के जीवन का पाठ देता था जो संसारिक मैल-कुचैल से पवित्र है। यद्यपि मिर्ज़ा साहिब का कुछ गांव पर अधिकार बाकी था तथा अंग्रेज़ सरकार की ओर से कुछ वार्षिक इनाम भी लगा था नौकरी के दिनों की पैनशन भी थी परन्तु जो कुछ वे देख चुके थे उस हिसाब से वह सब कुछ बहुत ही कम था इसी कारण वे सदा दुखी तथा परेशान रहते थे कि जिस कदर मैंने इस अपवित्र संसार के लिए प्रयत्न किये हैं अगर वे प्रयत्न मैंने धर्म के लिए किये होते तो आज में शायद क़ुतबे वक्त या ग़ौसे वक्त होता तथा प्राय: यह शेर पढ़ते थे:

"उमर बगुज़शत नामन्दासत जज़ अय्यामें चन्द
बे के दर चार किसे सुबह कनम शामे चन्द"

और मैं ने कई बार देखा कि अपना बनाया हुआ शेर वे रो कर पढ़ते और वे यह है:

अज़देर तो ऐ किसे हरबे किसे
ने चसत उमीदम के बरदम ना उमीद

तथा कभी वे दरदे दिल से अपना यह शेर पढ़ा करते थे :

बआद दीयहद अश्शसाक व ख़ाक पाऐ किसे
मरादे असल के दरख़ो तपद बजाए किसे

हज़रत ईज़्ज़त जल्लाहशाना (परमात्मा) के सामने ख़ाली हाथ जाने की हसरत दिन बदिन अपनी आयु के अन्तिम वर्षों में उन पर हावी होती गई थी अधिकतर पश्चाताप से कहा करते थे कि संसार की बेहूदा चिन्ताओं के लिए मैंने अपनी उमर व्यर्थ में गवां दी।

बचपन में ही अल्लाह की इबादत का शौक

इस लेख से जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने अपने पिता की इस अवस्था के विषय में लिखा है जिस में आप के पिता जी के बचपन से जवानी तक के युग का पता लगता है कि ख़ुदा तआला ने ऐसे रंग में आप की तरबीयत (शिक्षा) की जिस के कारण संसार का प्रेम आप के मन में पैदा ही न होने पाये, इस में कोई शक नहीं कि आप के पिता तथा बड़े भाई की संसारिक दशा उस समय भी ऐसी थी कि वे संसारिक तौर पर आदरणीय तथा धनवान कहलाते थे तथा अधिकारी उन की आज्ञा मानते तथा उन का सम्मान करते थे परन्तु फिर भी उन का संसार के पीछे पढ़ना तथा अपनी सारी आयु इस की प्राप्ती में व्यय कर देना परन्तु फिर भी उन का इस सीमा तक प्राप्त न कर सकना जिस सीमा तक वे इस पर परिवारिक अधिकार समझते थे इस पवित्र मन को जो अपने अन्दर किसी प्रकार की भी मैल न रखता था यह बता देने के लिए काफ़ी था कि संसार कुछ दिन का है तथा आख़रत में ख़ुदा से मामला होगा उसने अपने बचपने की आयु से इस पाठ को ऐसे याद किया कि मृत्यु तक ना भुला पाया तथा दुनिया कई प्रकार के सुन्दर वस्त्र पहन कर उन के सम्मुख आई उस को उस के पथ से हटा देने का प्रयत्न किया लेकिन वह कभी इस की ओर आकर्षित न हुआ उससे ऐसी जुदाई कर ली कि फिर उस से कभी ना मिला।

मिर्ज़ा साहिब को अपने बचपन से ही अपने पिता जी के जीवन में एक ऐसा तलख़ नमूना देखने का अवसर मिला कि दुनिया से आप की तबीयत सरद (दुनिया से अलग होना) हो गई तथा जब आप की आयु बहुत छोटी थी तब भी आप की सारी इच्छाएं अल्लाह की रज़ा की प्राप्ती में ही लगी रहती थीं आप के जीवनी लेखक शेख़ याकूब अली साहिब एक किस्सा जो आप की बहुत छोटी आयु में हुआ वर्णन करते हैं कि आप की आयु उस समय बहुत छोटी थी इस समय आपने अपनी ही आयु की एक लड़की जिस से बाद में आप का विवाह हुआ कहा करते थे :

"नामुरादे दुआ कर कि ख़ुदा मेरे (मुझे) नमाज़ नसीब करे"

इन शब्दों से जो बहुत बचपन की आयु के हैं, पता चलता है कि बहुत बचपन की आयु से आप के दिल में कैसी भावनाएं थीं तथा आपकी इच्छाओं का केन्द्र किस प्रकार ख़ुदा ही ख़ुदा हो रहा था साथ ही इस प्रतिभा का पता चलता है जो बचपन की आयु से आपके अन्दर पैदा हो गई थी क्योंकि इन शब्दों से पता चलता है कि इस समय भी आप अपनी सारी इच्छाओं को पूरा करने वाला ख़ुदा तआला को ही समझते थे तथा इबादत की शक्ति देना भी इस के ही अधिकार में समझते थे नमाज़ पढ़ने की इच्छा करना

तथा इस इच्छा को पूरा करने वाला ख़ुद को ही जानना तथा फिर इस घर में पल कर जिस के छोटे बड़े दुनिया को ही अपना ख़ुदा समझ रहे थे एक ऐसी बात है जो सिवाएं किसी ऐसे दिल के जो दुनिया की मिलावट से पवित्र हो तथा संसार में बहुत बड़ा परिवर्तन पैदा कर देने के लिए ख़ुदा तआला का समर्थन हासिल हो नहीं निकल सकता।

शिक्षा प्राप्ती का समय

जिस समय में आप का जन्म हुआ था वह समय बहुत अज्ञानता का था। लोग शिक्षा की ओर बहुत कम ध्यान देते थे। सिक्खों के समय की बात तो यहां तक प्रसिद्ध है कि अगर किसी के नाम किसी मित्र का कोई पत्र आ जाता तो उस को पढ़वाने के लिए उस को बहुत प्रयत्न तथा मेहनत करनी पढ़ती तथा कई बार लम्बे समय तक पत्र पड़ा रहता था। बहुत से धनवान बिल्कुल अशिक्षित थे लेकिन क्योंकि अल्लाह तआला ने आप से बहुत बड़ा कार्य करवाना था इस लिए आप की शिक्षा का उसने आप के पिता जी के मन में शौक डाल दिया तथा इन संसारिक चिन्ताओं जिन में वे थे इस अज्ञानता के समय में भी उन्होंने अपनी सन्तान को समय की आवश्यकता अनुसार शिक्षा देने में लापरवाही ना की अत: आप जब छोटे ही थे आप के पिता ने एक अध्यापक आप की शिक्षा के लिए रखा जिस का नाम फज़ल इलाही था उन से हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने क़ुर्आन मजीद तथा फ़रसी की कुछ पुस्तके पढ़ीं इसके पश्चात् दस वर्ष की आयु में फ़ज़ल अहमद नाम के अध्यापक रखे गए। यह अध्यापक बहुत नेक तथा धार्मिक आदमी था तथा जैसा कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब स्वयं लिखते हैं कि वे आप को मुहब्बत प्रेम तथा परिश्रम से शिक्षा देते थे इस अध्यापक से हज़रत साहिब ने अरबी व्याकरण की कुछ पुस्तकें पढ़ीं इस के पश्चात् सत्रह अठरह वर्ष की आयु में मौलवी गुल अली शाह आपके अध्यापक रखे गए इन से अरबी, व्याकरण, मनतिक तथा हिकमत की कुछ पुस्तकें पढ़ीं तथा चिकित्सा विज्ञान की कुछ पुस्तकें आपने अपने पिता जी से पढ़ीं जो एक योग्य हकीम थे। यह शिक्षा उस समय के अनुसार जिस में आप शिक्षा प्राप्त कर रहे थे एक बहुत बड़ी शिक्षा थी परन्तु वास्तव में उस कार्य के मुक़ाबले में जो आपने करना था कुछ भी ना था अत: हमने कुछ वे व्यक्ति भी देखे हैं जो आप के साथ उन अध्यापकों से पढ़ते थे जिन को आप के पिता जी ने आप की शिक्षा के लिए रखा था वे बहुत कम बुद्धि तथा ज्ञान रखने वाले थे तथा उन को एक साधारण पढ़े लिखे व्यक्ति से अधिक स्थान नहीं दिया जा सकता तथा जो अध्यापक आपकी शिक्षा के लिए रखे गए थे वे भी कोई बड़े ज्ञानी तथा अधिक शिक्षित नहीं थे क्योंकि उस समय शिक्षा बिल्कुल कम थी तथा फ़ारसी तथा अरबी की कुछ पुस्तकें पढ़ लेने वाले बहुत शिक्षित माने जाते थे तथा जिन हालात के अधीन और जिन अध्यापकों के द्वारा आप को शिक्षा दी गई वे ऐसे थे कि उन के द्वारा आप को कोई ऐसी शिक्षा नहीं मिल सकती थी जो उस कार्य के लिए आप को तैयार कर देती जिसके करने के लिए अल्लाह ने आपको भेजा था। हां इतना उस शिक्षा का परिणाम आवश्य हुआ कि आप को फ़ारसी, अरबी आ गई तथा फ़ारसी अच्छी तरह, अरबी कुछ आप बोलने भी लगे इस से अधिक आप ने कोई भी शिक्षा प्राप्त ना की तथा धार्मिक शिक्षा तो किसी अध्यापक से भी प्राप्त न की। हां आप को अध्ययन करने का बहुत चाव था तथा आप अपने पिता जी के

पुस्तकालय में इतना व्यस्त रहते थे कि कई बार तो आपके पिता जी को एक तो इस कारण कि आप के स्वास्थ्य को हानि ना पुहंचे तथा एक इस कारण कि आप इस ओर से हट कर उन के कार्य में उन की सहायता करें आप को पढ़ने से रोकना पढ़ना था।

नौकरी का समय तथा ईसाईयों से वाद-विवाद

जब आप शिक्षा प्राप्त कर चुके तो उस समय ब्रिटिश सरकार का पंजाब पर अधिकार हो चुका था विद्रह का समय भी बीत चुका था तथा हिन्दुस्तानी इस बात को अच्छी तरह समझ चुके थे कि अब इस सरकार की नौकरी में ही सम्मान है इस कारण विभिन्न सभ्यक परिवारों के युवक इस की नौकरी करने लगे थे ऐसे समय में तथा इस बात को जान कर कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब का मन ज़मीनदारी के कार्यों में नहीं लगता अपने पिता जी के सुझाव से आप स्यालकोट नौकरी प्राप्त करने को गए तथा वहां डिप्टी कमिश्नर साहिब ने दफ़्तर में नौकरी प्राप्त कर ली परन्तु अधिकतर समय धार्मिक अध्ययन में ही व्यतीत करते तथा नौकरी के बाद के समय में या तो आप स्वयं अध्ययन करते या दूसरे लोगों को शिक्षा देते या धार्मिक बातचीत में भाग लेते थे तथा इस समय भी आप की परहेज़गारी तथा ख़ुदा खौफ़ी का इतना प्रभाव था कि बावजूद इसके कि आप युवक थे तथा आप की आयु केवल अठाईस वर्ष थी मगर वृद्ध व्यक्ति मुसलमानों में से भी तथा हिन्दुओं में भी आप का सम्मान करते थे परन्तु उस समय भी आप एकान्त स्वभाव के थे तथा अपने घर से बाहर कम जाते तथा अधिकतर समय वहीं व्यतीत करते। ईसाई मिशन उन दिनों में पंजाब में नया नया आया था तथा मुसलमान उन के आक्रमणों से अंजान थे तथा अकसर इसाईयों से हार जाते थे परन्तु हज़रत मिर्ज़ा साहिब की जिस समय भी इसाईयों से बातचीत हुई उन को नीचा देखना पड़ा अत: पादरियों में से जो लोग सच्चे थे वे धार्मिक भिन्नता रखते हुए भी आपका सम्मान करते। अत: आप का जीवनी लेखक लिखता है कि रैवरनड, बटलर एम.ऐ जो स्यालकोट के मिशन में कार्य करते थे तथा जिन से हज़रत मिर्ज़ा साहिब के बहुत से वाद विवाद होते रहते थे जब विलायत वापस जाने लगे तो स्वयं कचहरी में आप से मिलने के लिए आये तथा जब डिप्टी कमिश्नर साहिब ने पूछा कि वे किस लिए आए हैं तो रैवरन्ड ने कहा कि केवल हज़रत मिर्ज़ा साहिब से मिलने के लिए तथा जहां आप बैठे थे वहीं सीधा चले गए तथा कुछ समय बैठ कर वापिस चले गए। यह उस समय की बात है कि जब ब्रिटिश सरकार की नई-नई विजय को पादरी लोग अपनी विजय समझ रहे थे तथा वे इतने घमण्डी हो गए थे कि उन दिनों जो पुस्तकें इस्लाम के विरुद्ध लिखी गईं उन को पढ़ने से पता चलता है कि पादरियों ने उस समय शायद यह सोच लिया था कि कुछ ही दिनों में सारे मुसलमानों को पकड़ कर सरकार बलपूर्वक इसाई बना देगी तथा वे इस्लाम तथा इस्लाम के संस्थापक के लिए सख़्त से सख़्त शब्दों का प्रयोग करने में ज़रा भी संकोच ना करते तथा यहां तक कि कुछ अकलमन्द युरोपियन लोगों को ही उन पुस्तकों को देख कर लिखना पड़ा कि उन लेखों के कारण यदि दोबारा सन 57 की तरह विद्रोह हो जाए तो कोई आश्चर्य जनक बात ना होगी तथा यह स्थिति उस समय तक रही जब तक कि इसाई पादरियों को विश्वास ना हो गया कि हिन्दुस्तान में ब्रिटिश सरकार है

ना कि पादरियों की और यह कि महारानी विक्टोरिया की सरकार बलपूर्वक इसाई बनाने की नहीं है तथा वह यह कभी पसंद नहीं करती कि किसी धर्म का अनुचित ढंग से दिल दुखाया जाए तथा उस समय के इसाई तथा मुसलमानों के सम्बन्ध बहुत खिंचे हुए थे तथा पादरियों का स्वभाव केवल उन्हीं लोगों के लिए अच्छा था और उनकी बातों की पुष्टि करते थे और जो उन के आगे जवाब दे दें उन के विरुद्ध उन का जोश बढ़ जाता था लेकिन बावजूद इसके कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब धर्म के प्रति ख़ुद्दार थे तथा धार्मिक वाद विवाद में किसी से दबते नहीं थे रेवरनड बटलर आप के अच्छे स्वभाव, संयम तथा सतसंकल्प से बहुत प्रभावित थे तथा इस बात का अनुभव करते थे कि यह मनुष्य मेरे शिकार नहीं हां सम्भव है कि मैं इस का शिकार हो जाऊं तथा उस स्वाभाविक घृणा के बावजूद जो एक शिकारी को शिकारी से होती है वो दूसरे धार्मिक वाद-विवाद करने वालों की तुलना में मिर्ज़ा साहिब ने विभिन्न सलूक करने पर मजबूर हुए तथा जाते समय कचहरी में ही आप से मिलने के लिए आ गये और मिले बिना जाना पसंद नहीं किया।

नौकरी छोड़ना तथा मुक़दमे की पैरवी

लगभग चार वर्ष आप स्यालकोट में नौकरी करते रहे परन्तु बहुत अधिक मजबूरी के साथ अन्त में पिता जी के लिखने पर जल्दी ही त्याग पत्र दे दिया तथा वापिस आ गए तथा पिता जी की आज्ञा के अनुसार उन के ज़मीनदारी के मुक़दमों की पैरवी (देख भाल) में लग गए परन्तु आप का मन इस कार्य में नहीं लगता था क्योंकि आप अपने माता पिता के बहुत आज्ञाकारी थे इसी कारण आप अपने पिता जी की आज्ञा को टालते तो नहीं थे परन्तु उस काम में आपका मन बिल्कुल नहीं लगता था अत: उन दिनों आप को देखने वाले लोग कहते हैं कभी कभी आप मुक़दमों में हार कर आते तो आप के चेहरे पर ख़ुशी के चिन्ह होते थे तथा लोग समझते थे कि शायद विजय हो गई है पूछने पर ज्ञात होता था कि हार गए हैं जब कारण पूछा जाता तो कहते थे कि हम ने जो करना था कर दिया अल्लाह की इच्छा यही थी तथा इस मुक़दमें के समाप्त होने से कुछ अवकाश तो मिल गया अल्लाह की याद में लगे रहने का समय मिलेगा यह समय आप का अजीब असंमजस का समय था पिता जी चाहते थे कि आप या तो ज़मीनदारी के कार्य में लग जाएं या कोई नौकरी कर लें तथा आप इन दोनों बातों से सहमत न थे तथा इसी कारण आप को अधिकरतर कटाक्ष तथा फ़टकार सुननी पड़ती थी जब तक आपकी माता जी जीवित रहीं आप पर एक ढाल के समान रहीं परन्तु उन की मृत्यु के पश्चात् आप अपने पिता जी तथा भाई की भर्त्सना का अधिकतर शिकार हो जाते तथा कभी कभी वे समझते थे कि संसारिक कार्यों से अलग होने का कराण सुस्ती है अत: आप फ़रमाया (कहा) करते थे कि कभी-कभी आप के पिता जी बहुत परेशान हो जाया करते थे। तथा कहते थे कि मेरे बाद इस लड़के का निर्वाह किस प्रकार होगा तथा इस बात का उनको बहुत दुख था कि यह अपने भाई पर निर्भर रहेगा तथा कभी-कभी वे आप के अधिक पढ़ने पर चिढ़ कर आप को मुल्लां भी कह देते थे और फ़रमाते थे कि यह हमारे घर में मुल्ला कहां से पैदा हो गया परन्तु बावजूद इसके उन के मन में स्वयं आप का प्रभाव था तथा जब कभी वे अपनी संसारिक असफ़लता को याद करते तो धार्मिक बातों में आप को लीन देख कर प्रसन्न होते थे तथा उस समय फ़रमाते थे कि असल कार्य तो यह ही है जिस में मेरा पुत्र लगा

हुआ है परन्तु क्योंकि उन की सारी आयु संसारिक कार्यों में ही व्यतीत हुई थी इसी कारण पश्चाताप उन के मन में रहता परन्तु हज़रत मिर्ज़ा साहिब इस बात की परवाह ना करते थे तथा किसी किसी समय अपने पिता जी को भी क़ुर्आन तथा हदीस सुनवाया करते थे तथा यह एक अद्भुत दृश्य था कि पिता तथा पुत्र दो अलग अलग कार्यों में लगे हुए थे तथा दोनों में से हर एक दूसरे को अधीन करना चाहता था पिता चाहता था कि किसी प्रकार पुत्र को अपने विचारों के अनुसार बना ले तथा संसारिक सम्मान की प्राप्ती में लगा दे तथा पुत्र चाहता था कि अपने पिता को संसारिक कार्यों से मुक्ती दिला कर अल्लाह तआला से प्यार करने में लगा दे अत: यह अद्भुत दिन थे जिन का खींचना कलम का कार्य नहीं प्रत्येक मनुष्य अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार अपने मन में इसका नक्शा खींच सकता है। इस समय आप के सम्मुख फिर नौकरी का प्रश्न उत्पन्न हुआ तथा रियासत कपूरथला के शिक्षा विभाग का अफ़सर बनाने का निर्णय हुआ परन्तु आपने मना कर दिया तथा अपने पिता जी को दुखी देख कर इस बात को ही पसंद किया कि घर पर ही रहें तथा उनके कार्यों में जहां तक हो सके हाथ बटाएं। जैसा कि पहले बताया गया है कि आप का मन उस कार्य में भी नहीं लगता था परन्तु आप अपने पिता जी की आज्ञा अनुसार उन के अन्तिम दिनों को सुखी बनाने के लिए इस कार्य में अवश्य लगे रहते थे अत: हार जीत से आप को लगाव न था।

मकालम-ए-इलाहिय्या का आरम्भ
(अल्लाह से इल्हाम व कलाम का आरम्भ)

आप की आयु लगभग चालीस वर्ष की थी जबकि 1876 में आप के पिता जी एक बार बीमार हुए और उन की बीमारी बहुत अधिक भयानक न थी परन्तु हज़रत मसीह मौऊद को अल्लाह तआला ने इल्हाम (आकाशवाणी) के द्वारा बताया कि 'अत्तारिको व मत्तारिक' अर्थात् रात के आने वाले की सौगन्ध तू क्या जानता है रात को क्या आने वाला है तथा साथ ही बताया गया कि इस इल्हाम (ईश्वर वाणी) में आप के पिता जी की मृत्यु की सूचना दी गई है जो कि मग़रिब के पश्चात् होगी। अर्थात् शाम के बाद अत: हज़रत साहिब को इस समय से पूर्व ही लम्बे समय से भले स्वप्न आ रहे थे जो अपने समय पर बहुत सफ़ाई से पूरे हुए थे तथा जिन के गवाह हिन्दू तथा सिक्ख भी थे तथा अब तक कुछ इनमें से जीवित हैं परन्तु आकाशवाणी में से इन में यह पहली आकाशवाणी है जो आपको हुई तथा इस के द्वारा ख़ुदा तआला ने अपने प्रेम के साथ आपको बताया कि तेरे संसारिक पिता की मृत्यु होती है परन्तु आज से मैं तेरा आसमानी बाप होता हूं। अत: पहली आकाशावी (इल्हाम) जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को हुआ यही था जिसमें आप को आप के पिता जी की मृत्यु की सूचना दी गई थी। इस सूचना पर आप के मन में दुख होना ही था अत: आप को इस सूचना से दुख हुआ तथा मन में ख़्याल गुज़रा कि अब हमारा निर्वाह किस प्रकार होगा जिस पर दूसरी बार फ़िर इल्हाम हुआ तथा आप को अल्लाह तआला ने हर प्रकार से तसल्ली दी इस को मैं इस स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में लिख देना उचित समझता हूं...(शेष ...)

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

सामान्य ज्ञान

हैपेटाइटिस बी क्या है इससे कैसे बचा जा सकता है?

हैपेटाइटिस एक प्रकार का संक्रमण है और हैपेटाइटिस बी रोगाणु (एचबीवी) के कारण जिगर में सूजन आ जाती है। यह रोगाणु संक्रमित व्यक्ति के खून और शरीर से निकलने वाले दूसरे द्रवों में पाया जाता है। यह रोगाणु जिगर पर हमला करता है और आखिरकार जिगर के प्राइमरी कैन्सर की वजह से रोगी की मौत भी हो सकती है। यह संक्रमण शैशव से लेकर बूढापे तक कभी भी हो सकता है और यह इस बात पर निर्भर है कि रोगाणु कब कितना सम्पर्क में होता है। टीके लगाकर संरक्षण हैपटाइटिस बी से बचाव का सर्वोतम उपाय है।

हैपटाइटिस बी रोगाणु किसी भी उम्र में हमला कर सकता है तो क्या बड़ों को भी टीके लगवाने चाहिए?

बिलकुल ठीक संक्रमण किसी भी उम्र में हो सकता है। बडी उम्र के चिरकालिक रोग होने जिगर का कैंसर होने की सम्भावना कम रहती है, लेकिन गंभीर हैपेटाइटिस होने की सम्भावना ज्यादा होती है इसलिए किशोरों और वयस्को को पहले से टीके नहीं लगे हैं तो अब टीके लगवाने चाहिए हैपटाइटिस बी के टीकों की कुल तीन खुराक होती है 0, 1, और 6 माह पर यानी अगर पहली खुराक आज ली है तो दूसरी खुराक उसके एक महिने बाद और तीसरी खुराक ,पहली खुराक के छः महिने बाद ली जानी चाहिए शिशुओं को यह टीका डीपीटी की तीन प्राथमिक खुराकों (6, 10, 14 सप्ताह) के साथ ही लगाया जाता है।

हैपटाइटिस बी का टीका कितना सुरक्षित है?

हैपेटाइटिस बी का टीका पूरी तरह सुरक्षित और एचबीवी रोगाणु संक्रमण तथा उसके गंभीर प्रभावों से बचने के लिए बेहद प्रभावकारी है। यह टीका लम्बे समय तक लिए सुरक्षा प्रदान करता है। कुछ मामलों में कुछ अन्य प्रभाव हो सकते हैं, जैसे सुई लगने की जगह सूजन, सिरदर्द, चिडचिडापन और बुखार।

पोलियो की खुराक पिलवाने के बाद बच्चे को मां का दूध नहीं पिलाना चाहिए क्या यह सही है?

नहीं, यह सही नहीं है। पोलियो की खुराक पिलवाने के बाद बच्चें को मां का दूध पिलाया जा सकता है और पिलाना ही चाहिए मां का दूध सर्वोतम पोषण होता है और उसे हर समय दिया जाना चाहिए।

यह कैसे पता चलेगा की दवा बच्चे को सुरक्षा कर रही है?

डीपीटी का टीका लगने के बाद उस जगह शिशु को दर्द हो सकता है और बुखार भी हो सकता है ऐसे में शिशु को पेरासिटामोल 500 मिलीग्राम की एक चौथाई गोली देनी चाहिए

खसरे के टीका लगने के बाद खसरे जैसे दाने उभर सकते हैं। ऐसा होना सामान्य बात है और यह इस बात का संकेत है कि टीके असर कर रहे हैं, किन्तु अगर बच्चे को तेज बुखार हो या बेहोशी आने लगे तो तुरन्त डॉक्टर की सलाह लें।

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081
Guddu Book Store
All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools
Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536
MANUFACTURER and WHOLE SELLER
Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443
Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers
Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993
Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक
WASIMA STONE CRUSHER
Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

Mob. : 09986670102
09036915406
Prop.
Fazal-e-Haq
Anwar-ul-Haq
Eajaz-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments
Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.
Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical, Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

ज़रूरी ऐलान

130वां जलसा सालाना क़ादियान

दिनांक 26, 27, 28 दिसंबर 2025 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 130वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 26,27,28 दिसंबर 2025 ई. (शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की मन्ज़ूरी दी है। अहबाब जमाअत अभी से इस जलसा सालाना में सम्मिलित होने की नीयत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सबको, ख़ुदा की खातिर आयोजित किए जा रहे इस जलसे से फायदा उठाने की तौफीक अता फरमाए। इस जलसे की कामियाबी और हर प्रकार से बाबरकत होने के लिए इसी प्रकार नेक रूहों की हिदायत का ज़रिया बनने के लिए दुआएं करते रहें। अल्लाह तआला आपको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे। (नाज़िर इस्लाह व इरशाद मर्कज़िया, क़ादियान)

☆ ☆ ☆